स्त्रोतयज्ञ

बाह्य दर्शन है माया का, महत्व आज है काया का,

रहस्य जान आलोक का, अप्रकट गड़े सामर्थ्य का ||

हरित पत्तों की दमक, कोमल पुष्पों की महक,

रसभरे फलों की चमक, कौन फूंके इनमे धमक ?

प्रदीप्तता से दूर रहकर, चकाचौंध से परे घरकर,

कर्मठ जड़ों का छिपकर, है अविरल निरंतर सृजन ||

शुद्ध सलिल को खोजा करतीं, मूलतत्व अन्वेषित करतीं,

भूमिगत रहकर ये सदा, स्त्रोतयज्ञ में आहुति हैं देतीं ||

फल-फूल शाखों की प्रसिध्धि, मृदु-सुगंध रसरंग की ख्याती,

भूतले डटी बुनियादी भक्ति, दमकी अँधेरे की सृजन शक्ति ||